B.A-3

Short Notes on Raga Darbari

- इस राग की रचना आसावरी थाट से मानी गई है।
- इसकी जाति वक्र सम्पूर्ण है।
- इसका गायन समय मध्य रात्रि है।
- इसका वादी स्वर ऋषभ और सम्वादी पंचम है।
- यह राग आलाप प्रधान राग है।
- गंधार और धैवत वक्र होने के कारण इसमें ध नि प और ग म रे सा स्वरों की संगतियाँ अधिक दिखाई जाती है।
- इस राग का चलन अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तकों में होता है, किन्तु मन्द्र सप्तक में यह विशेष रूप से खिलता है।
- यह राग पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त है, इसलिए इसे 'मर्दाना राग' भी कहते हैं।
- इसमें सारंग अंग से तानें ली जाती है और बीच-बीच में कान्हड़ा अंग ग म रे सा और ध नि प, पकड़ देते हैं जिससे दरबारी कान्हड़ा स्पष्ट हो जाता है।